17 / 03 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

इस सहज मार्ग में सहजता का अनुभव

➢➢ मैं अनुभवी मूर्त आत्मा हूँ...

➳ _ ➳ ज्ञान सागर बाबा के सम्मुख बैठी हुई मैं आत्मा..

→ ज्ञान सागर की लहरों में लहराती हुई

→ ज्ञान के एक-एक प्वाइंट को

- स्वयं में धारण कर रही हूँ

→ महारथी निमित्त आत्माओं के

- अनुभवों की पालना में पल रही हूँ..

➳ _ ➳ यह ज्ञान कितना सहज है..

→ बापदादा आदि-मध्य-अंत का ज्ञान

- एक कहानी के रूप में सुनाते हैं..

→ कोई भी नई बात मुश्किल लगती है..

→ ये ज्ञान पहली बार मैंने नहीं सुना है..

- कल्प-कल्प बापदादा ने इस ज्ञान को सुनाया था..
- अनेक बार रिपीट किया है
- इसलिए बहुत ही सहज लगता है..

→ सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को जान

- मैं मास्टर नालेजफुल, त्रिकालदर्शी बन गई हूँ

→ मैं कल्प-कल्प की अनुभवी आत्मा हूँ..

➳ _ ➳ योग भी कितना सहज है...

→ बाबा को याद करना कितना सहज है..

→ कितना समीप का सम्बन्ध है..

→ बहुत ही प्यारा है मेरा बाबा..

→ जिससे प्यार होता है

- उसको याद करना कोई मुश्किल नहीं है..
- न चाहते भी उनकी याद आती ही रहती है..

→ मेरे सर्व सम्बन्ध एक बाबा से है..

→ मैं कितनी भाग्यशाली आत्मा हूँ..

- बाबा से कितनी ही प्राप्तियां मिली है..
- कितने सारे खजानों का मालिक बनाया है

→ जो 21 जन्मों की वर्सा दे रहा है

- उसे याद करना कितना सहज है..

➢➢ मैं सहज राजयोगी हूँ...

➳ _ ➳ ज्ञान सागर बाप ने

→ सागर को गागर में समाकर

■ मुझे गागर दे दिया है...

→ बाबा ने सिर्फ दो शब्दों में

→ ज्ञान और योग को समाकर दे दिया-

■ ‘‘आप और बाप''

→ दो शब्दों को धारण करना

■ बहुत ही सहज है..

➳ _ ➳ मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ...

→ ‘मैं और मेरा बाबा’

→ बस इन दो शब्दों को धारण कर

■ हर मुश्किल को आसान कर रही हूँ..

→ मेरी सारी कमी-कमजोरियां

■ समाप्त हो रही हैं..

→ अब कोई भी पुराना संस्कार

■ रूकावट नहीं डालता है..

→ सहज रास्ते के बीच में

■ अब कोई बंधन नहीं है..

→ अब मैं आत्मा रास्ते के पत्थरों को

■ तोड़ने में समय बर्बाद नहीं करती

→ हाई जम्प लगाकर

■ सहज ही पार कर लेती हूँ..

→ व्यर्थ संकल्पों के बदले

■ ‘ड्रामा’ शब्द के आधार से

■ सहज ही हाई जम्प लगाती हूँ..

➳ _ ➳ मैं आत्मा ज्ञान के हर प्वाइंट की अनुभवी बन रही हूँ...

→ मैं आत्मा सदा ज्ञान की मुख्य पाइंटस को

■ रोज रिवाइज करती हूँ..

■ अनुभव में लाते रहती हूँ..

→ अपने को चेक कर चेन्ज करती रहती हूँ..

→ परिस्थितियों में समय पर

■ हर प्वाइंट टच हो रही है..

→ मैं आत्मा सहज ही

- हर परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर रही हूँ..

→ कभी भी टाइम वेस्ट नहीं करती हूँ..

→ व्यर्थ संकल्पों के हेमर से

- समस्या के पत्थर को तोड़ने में नहीं लगाती हूँ..

→ मजदूर बन बार-बार समस्या के समाधान में

- अपना समय नहीं गंवाती हूँ..

→ बेगमपुर का बादशाह बन

- समस्या शब्द को ही अपने से दूर कर रही हूँ..

→ तख्तनशीन बन पुराने संस्कारों को

- अपना दास बना रही हूँ..

→ ताजधारी, तिलकधारी बन

- सहज राजयोगी होने का अनुभव कर रही हूँ..